ALIF LAAM MEEM
A PUBLICATION OF
MS RESEARCH FOUNDATION

हिंदी सीखो

पाठमाला

३

TERM - 2

MFERD

एकीकृत मूल्य आधारित पाठ्यक्रम

मिल्लत फ़ाउंडेशन

फ़ॉर एजूकेशन रिसर्च एंड डेवलपमेंट

रेखांकरण

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के परिच्छेद

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा २००५ का संग्रहित विश्लेषण

यह एक तथ्य है कि शिक्षा प्राप्ति के जो तरीक़े अपनाए गए हैं वे छात्रों एवं माता-पिता पर बोझ बनते जा रहे हैं। इस लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा २००५ ने पाँच मार्गदर्शक नियमों का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है।

(i) शिक्षा को पाठशाला के बाहर की दुनिया से जोड़ना ।
(ii) सीखते समय रटने की विधि के हटाने को सुनिश्चित बनाना।
(iii) पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त पाठ्यक्रम की समृद्धि
(iv) परीक्षा को लचकदार बनाना और कक्षा को जीवन से जोड़ना
(v) संवेदना पूर्ण पोषण एवं चिन्ताशील लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए पहचान बनाना।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा २००५ शिक्षात्मक दृष्टि से।

एक बहुसांस्कृतिक समाज को शिक्षा, मूल्य, मानवता सहनशीलता तथा शांति को बढ़ावा देने योग्य होना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा के भीतर एक ऐसा ढांचा तत्पर किया गया है जो अध्यापकों और पाठशालाओं के अनुभव को प्रयोग में लाते हुए छात्रों की सोच के अनुरूप हो।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम अनुभव के आधार पर तैयार होना चाहिए। परन्तु इस के मुख्य प्रश्न कुछ इस प्रकार हैं।

(i) क्या पाठशाला शिक्षात्मक उद्देश्य को वांछित रूप से पूरा करने का प्रयास कर रहा है?
(ii) शिक्षात्मक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु क्या अवलोकन किया जाना चाहिए।
(iii) इन शिक्षात्मक अवलोकनों को भाववाहक ढंग से किस प्रकार संगठित बनाया जा सकता है?
(iv) वांछित शिक्षात्मक उद्देश्य के समापन को किस प्रकार सुनिश्चित बनाया जाए?

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूप रेखा २००५ के शिक्षात्मक मार्गदर्शक नियम

बढ़ती आयु के साथ-साथ बालक अपने वातावरण से प्राकृतिक रूप से भिन्न कौशल प्राप्त कर लेते हैं। इस के अतिरिक्त वे अपने आस-पास के वातावरण और जीवन का भी अनुसरण करते हैं। जब वे कक्षा में प्रवेश करते हैं तो उन के प्रश्न पाठ्यक्रम को स्थिर और अधिक रचनात्मक बना सकते हैं। ऐसे सुधार स्वीकृत पाठ्यक्रम नियमों के चलन में सहायक होते हैं जो ज्ञात से अज्ञात, तथ्य से कल्पना तथा क्षेत्रीय से वैश्विक की ओर ले जाते हैं।

एम एफ़ ई आर डी की पुस्तकें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूप रेखा के मार्गदर्शक नियमों पर तैयार की गई हैं। हम चाहते हैं कि NCF की ओर से बनाए गए शिक्षात्मक उद्देश्य के कार्यान्वयन में न केवल हमारे छात्र अपनी पूर्ण भूमिका निभाएँ बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में ईमानदार तथा उत्तरदायी नागरिक बनें । हम गंभीरता एवं विश्वास के साथ इस पाठ्यक्रम पर चले तो छात्रों का व्यक्तित्व निखरेगा जो आगे चल कर दूसरों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन सिद्ध होगा।

एम.एफ़.ई.आर.डी के दृष्टिकोण को जानने हेतु कृपया आप पुस्तक के पिछले पृष्ठ का अध्ययन करें।

परिचय

मिल्लत फ़ाउंडेशन फॉर एजूकेशन रिसर्च एंड डेवलपमेंट एक संगठन है जो प्रसार, समन्वय, सहयोग, सहकारिता एवं मुस्लिम शैक्षिक संस्थाओं को एक सार्वजनिक मंच प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया है। इस प्रकार इस्लामी संविधान की सीमाओं में रहते हुए शैक्षिक मैदान में व्यक्तिगत एवं संस्थाओं द्वारा उत्कृष्टता प्राप्त करना है।

एम.एफ.ई.आर.डी का उद्देश्य शोध एवं विकास के माध्यम से भिन्न प्रकार की ऐसी चुनौतियों को संबोधित करना एवं उनका समाधान खोजना है जिनका शैक्षिक संगठन सामना कर रहे हैं। इस का एक प्रमुख कार्यक्रम पाठशाला तथा विद्यालय के लिए मूल्य पर आधारित पाठ्यक्रम तत्पर करना है जो भविष्य की पीढ़ी को विशिष्टता के लिए तैयार कर सके।

पाठ्यक्रम सीखने एवं अनुभव करने हेतु जिस के माध्यम से छात्र शिक्षाविदों, गतिविधियों, सीखने के वातावरण, मूल्यांकन, पारस्परिक वार्तालाप जैसे समूह कार्य छात्र अध्यापकों के साथ पाठशाला में प्रवेश के पश्चात से बाहर आने तक करता है। कई वर्ष बच्चे के मनोविज्ञान, शिक्षा में इस्लामी परिप्रेक्ष्य एवं भिन्न पाठ्यक्रमों की समीक्षा के पश्चात् एम.एस रिसर्च फ़ाउंडेशन ने मूल्य पर आधारित पाठ्यक्रम बनाया है जो राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अनुकूल है। यह बच्चों के संपूर्ण विकास, स्वयं की पहचान, समय की आवश्यकता तथा उस को भविष्य का मार्ग-दर्शक बनाने में सहयोग देगा।

निम्नलिखित पर आधारित

- उद्देश्य इस्लाम, मनोविज्ञान, शिक्षा तथा हितैशियों के अनुसार।
- पाठ्य-विवरण आयु तथा सरकारी स्तर के अनुकूल।
- कार्यप्रणाली जो छात्र केंद्रित तथा विषय के उपयुक्त साधन में अध्यापकों का प्रशिक्षण, शिक्षण में सहयोगी सामग्री एवं शिक्षक का मार्ग-दर्शन शामिल है।

- मूल्यांकन - रचनात्मक, योगात्मक, स्वयं, सह-शैक्षिक, व्यवहारवादी एवं दीर्घकालिक।
- गतिविधियाँ - पाठ्यक्रमिक, सह-पाठ्यक्रमिक तथा अतिरिक्त पाठ्यक्रमिक, आयोजन के लिए दिशा निर्देशन के साथ।
- समय बद्धता - तिथिपत्र, दिन-वर्ष की योजना, काम का बोझ, अवधि विभाजन तथा प्रतियोगिताएँ।
- अवलोकन - प्रतिक्रिया एवं अनुसंधान।

सेन्ट्रल अकेडमी फ़ॉर रिसर्च एंड डेवलपमेंट (CARD)

(केन्द्रित प्रशिक्षण शाला विकास एवं शोध खंड) की स्थापना परियोजना बनाने, प्रशिक्षण देने तथा विभिन्न पाठशालाओं के सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन के निरीक्षण हेतु की गई है।

विषय सूची

9. प्रतिज्ञा (वार्तालाप)................... 1-7

10. अम्मा अम्मा पर्दा कर लो (कविता).. 8-12

11. हज़रत उमर (رضی اللہ عنہ) 13-19

12. वचन 20-27

13. खट्टे अंगूर (कविता)..................28-34

14. आत्मग्लानी (वार्तालाप)..............35-43

15. आलसी बालक..........................44-49

16. लाभदायक मित्र (कविता)............50-52

भाषा की योग्यता और कौशल

क्र.स.	पाठ का नाम	विधा	सुन्ना बोलना, समझना और पढ़ना	लिखना	शब्द कोश/व्याकरण	दृश्य श्रव्य कौशलों का विकास	मूल्य
9.	प्रतिज्ञा	वार्तालाप	पाठ को ध्यान पूर्वक सुन्ना, समझना वार्तालाप द्वारा अभिनय करना।	प्रश्नोत्तर ख़ाली स्थान भरो।	कठिन शब्दों के अर्थ एवं हल अक्षरों का ज्ञान, विलोम, संज्ञा ।	जंगल का चित्र देखकर चार वाक्य मौखिक रूप में सुनाइए।	सहयोग, चिंता सहानुभूति, प्रेम आदि गुणों का विकास।
10.	अम्मा अम्मा पर्दा कर लो	कविता (पर्दे पर)	प्रभाव शाली ढंग से कविता का उच्चारण करना पर्दे का ज्ञान देना।	रिक्त स्थानों की पूर्ति करना।	संयुक्त अक्षरों का ज्ञान 'ई' लगा कर शब्द बनाना, विलोम एवं मिलते जुलते शब्द।	पर्दा क्या है मौखिक रूप में समझाना।	पर्दा एवं हिजाब का महत्व एवं अल्लाह की रज़ा इसी में है।
11.	हज़रत उमर(ﷺ)	इस्लामी कथा	प्रभावपूर्ण वाचन हज़रत उमर (ﷺ) की वीरता, साहस और उन पर पवित्र क़ुरआन की सूरे ताहा का प्रभाव।	प्रश्नोत्तर रिक्त स्थान।	कठिन शब्दों के अर्थ, भिन्नार्थ पर्यायवाची आदि का ज्ञान।	उमर (ﷺ) का संघर्ष, दीन को फैलाने की भावना को मौखिक रूप में बताना।	साहस, वीरता, इस्लाम की उन्नति।
12.	वचन	कहानी	विराम चिह्नों का प्रयोग करते पढ़ना, समझना एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना, वचन का पालन करना।	प्रश्नोत्तर रिक्त स्थानों की पूर्ति।	कठिन शब्दों के अर्थ वचन का ज्ञान।	वचन का जीवन में महत्व बताना।	वचन का पालन ईमानदारी कर्तव्य निष्ठा।
13.	खट्टे अंगूर	कविता	शुद्ध शब्दोच्चारण आरोह अवरोह के साथ कविता पढ़ना एवं समझाना।	ख़ाली स्थान भरो, पंक्तियाँ पूरी करो।	अनेकार्थी शब्द बनाना, वचन बदलो।	खट्टे अंगूर का अर्थ समझाएँ एवं चित्रों का प्रयोग करें।	हार को छिपाने के लिए दूसरों पर दोष न लगाना।
14.	आत्मग्लानी	वार्तालाप	चोरी से स्वयं की हानि और तिरस्कार। वार्तालाप द्वारा अभिनय करना।	रिक्त स्थानों की पूर्ति, किस ने किस से कहा?	कठिन शब्दों के अर्थ का ज्ञान, विशेषण एवं "और" "ओर" का अन्तर।	चोरी से संबंधित अन्य कथा सुनाना।	चोरी से स्वयं की हानि और तिरस्कार।
15.	आलसी बालक	शिक्षा प्रद कथा	विराम चिह्नों का प्रयोग करते पढ़ना, समझना एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना, वचन का पालन करना।	प्रश्नोत्तर रिक्त स्थानों की पूर्ति।	कठिन शब्दों के अर्थ परिश्रम का ज्ञान और व्याकरण	आलस असफलता की ओर लेजाता है।	घमण्ड मनुष्य को नाश की ओर लेजाता है।
16.	लाभ दायक मित्र	कविता (परोपकारी)	मुखमुद्रा का प्रयोग करते हुए शुद्ध उच्चारण में कविता पढ़ना एवं वृक्षों का ज्ञान देना।	पंक्तियों को पूरा करो।	वचन, वाक्यों में प्रयोग, पर्यायवाची शब्द, अनुस्वार एवं अनुनासिक का ज्ञान।	चित्रों द्वारा वृक्षों की सेवा एवं फल का ज्ञान देना।	वृक्षों की विशेषता बताना, परोपकारी स्वभाव से परिचित कराना।

9

प्रतिज्ञा

घना जंगल था। चारों ओर हरे- भरे पेड़-पौधे थे। पानी की एक सुंदर नहर बह रही थी। ऐसा लगता था कि जानवरों पर प्रकृति की विशेष दृष्टि थी। हाथी और बंदर में बड़ी मित्रता थी। बंदर घूम-घूम कर स्वादिष्ट भोजन स्वयं खाता और हाथी को भी देता था। दिन बीतते गए।

प्रथम दृश्य

एक दिन बंदर बिना कुछ खाए-पिए उदास बैठा था।

हाथी : भाई बंदर मैं देख रहा हूँ कि तुम कुछ दिनों से उदास रहने लगे हो? आख़िर बात क्या है?

बंदर : नहीं कुछ नहीं।

हाथी : मुझे बताओ शायद मैं तुम्हारे काम आ सकूँ।

बंदर : मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता है।

हाथी : मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करूँगा। बोलो क्या करना है?

बंदर : मुझे चिन्ता है कि हिरण और गीदड़ के बीच हुए झगड़े की यह लड़ाई जंगल की शांति न भंग कर दे।

हाथी : बिलकुल सही कहा आपने ! नदी किनारे मैं पानी पीने गया था, तब मैं ने देखा कि गीदड़ बुरी तरह घायल अवस्था में पीड़ा से कराह रहा था।

बंदर : हाँ, मेरी उदासी का कारण उसकी पीड़ा ही है।

हाथी : भाई बंदर! यह बताओ कि इन के बीच झगड़ा क्यों हुआ। कल तक तो ये दोनों बहुत अच्छे मित्र थे।

बन्दर : हिरण और गीदड़ नदी किनारे एक ही स्थान पर पानी पीना चाहते थे। बस इसी बात पर इतना बड़ा झगड़ा हो गया।

हाथी : झगड़ा क्यों? एक के बाद एक पानी पी लेते। अल्लाह ने हमें यह सुंदर जंगल दिया है । यहाँ हमारा राज है। हमें मारने के लिए यहाँ कोई मनुष्य नहीं आता। फिर झगड़ा किस बात का।

बंदर : किसी पर अत्याचार करना अन्याय कहलाता है। इस अन्याय को रोकने के लिए हमें कुछ करना चाहिए।

हाथी : हमें जंगल की ख़ुशहाली और सुख शांति को बनाए रखना चाहिए। अल्लाह की दी हुई नेमत से लाभ उठाना चाहिए।

बंदर : हाँ हम यह बातें सारे जंगल वासियों को किस प्रकार समझाएँ ?

हाथी : अगर सोच नेक हो तो अल्लाह स्वयं मदद करते हैं।

बंदर : मैं जाकर जंगल वासियों को यह सूचना देता हूँ कि कल की सभा जामुन के पेड़ के नीचे नदी किनारे होगी। सभी जंगल वासियों का उपस्थित होना आवश्यक है।

हाथी : यह ठीक है! जाइए सब को यह सूचना दे दीजिए।

बंदर : हाथी भाई आप अन्याय और अत्याचार के बारे में चर्चा करेंगे। और अल्लाह की दी हुई नेमतों के विषय में भी बताएँगे।

द्वितीय दृश्य

सभा स्थल पर सभी जानवर समय पर उपस्थित थे। हिरण और गीदड़ एक दूसरे से मुँह फुलाए दूर-दूर बैठे थे। शेर, चीता, ख़रगोश, लोमड़ी, गोरख़र (zebra) जिराफ़, सभी जानवर चिंतित थे कि यह सभा किस लिए है। शेर गीदड़ से कहता है।

शेर : गीदड़ तुम्हारी यह दुर्दशा किसने की ?

गीदड़ मौन रहा।

बंदर : देखो लड़ाई का क्या परिणाम हुआ। इसलिए कहते हैं।
''आपस में झगड़ा मत करो।''

शेर : यह बातें दुर्बल के लिए हैं, हमारे लिए नहीं। हम तो जंगल के राजा हैं।

चीता : हम किसी की बात नहीं मानेंगे। सब को हमारी बात माननी होगी।

हाथी : नहीं मानकर आपस में झगड़ा करेंगे क्या? देखो इस बेचारे की हालत। इस का एक हाथ और एक पैर टूट गया है। हिरन भी घायल है। लड़ने का क्या परिणाम हुआ? यह सारी दुनियाँ जब अल्लाह ने बनाई तो यह सब चीज़ें अल्लाह की दी हुई नेमत हैं। इस की हर चीज़ पर सब का समान अधिकार है। इस में झगड़ा करने की क्या बात है? स्थान के लिए, भोजन के लिए या किसी और चीज़ के लिए लड़ने की क्या आवश्यकता है?

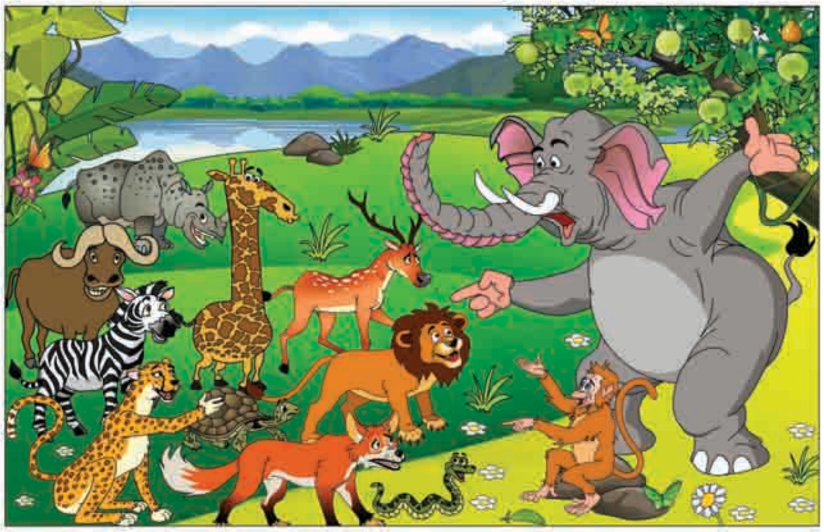

एक के बाद एक सभी जानवरों ने गीदड़ से उस का हाल-चाल पूछा।

हाथी : दोस्तों! बताओ दुनिया किस ने बनाई?

सभी जानवर: अल्लाह ने।

हाथी : इस जंगल को, हम सब को किस ने बनाया?

सभी जानवर: बेशक अल्लाह ने।

हाथी : अन्याय करने वाला और अन्याय सहने वाला अल्लाह को पसन्द नहीं है।

यह सुनकर सभी जानवर प्रसन्न होते हैं।

सभी जानवर एक साथ कहते हैं : हाँ ! हम आप की बात मानेंगे।

हिरण और गीदड़ दोनों लज्जित होते हैं। दोनों आपस में एक दूसरे से क्षमा माँगते हैं।

हाथी, बंदर और सभी जानवर (एक साथ) चलो आज हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम आपस में एक दूसरे पर अन्याय, अत्याचार नहीं करेंगे। भोजन भी मिल बाटकर खाएँगे। और अल्लाह के बताए हुए पथ पर चलेंगे। अल्लाह की नेमतों से लाभाँवित होंगे।

पाठ से सीख मिल–जुल कर रहना सीखेगा।

अध्यापन संकेत

१) पाठ के माध्यम से पारस्परिक सहानुभूति और दूसरों की भलाई जैसे गुणों का विकास करना। २) संज्ञा भिन्न-भिन्न उदाहरण द्वारा समझाना।

I. शब्दार्थ

१. सहायता : मदद
२. लाभाँवित : लाभ उठाना
३. मनुष्य : मानव, इन्सान
४. उपस्थित : मौजूद

II. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१. हाथी और ________ में बड़ी मित्रता थी।
२. अल्लाह ने हमें यह ________ जंगल दिया है ।
३. किसी पर ________ करना अन्याय कहलाता है।
४. सभा स्थल पर सभी ________ समय पर उपस्थित थे।
५. ________ की नेमतों से लाभाँवित होंगे।

III. नीचे दिए गए संज्ञा शब्द को रेखांकित कीजिए ।

१. किसी जंगल में एक बन्दर और एक हाथी रहते थे।
२. मेज़ पर पुस्तक क़लम और घड़ी है।
३. जंगल में शेर चीता लोमड़ी भालू आदि रहते हैं।

IV. भाषा ज्ञान

विलोम

परिभाषा : उल्टे अर्थ वाले शब्दों को 'विपरीत - शब्द या विलोम शब्द कहते हैं।

उदाहरण: बड़ा x छोटा   सुबह x शाम

१. विपरीतार्थी (विलोम शब्द) ढूँढकर लिखिए।

१. अन्याय x ________

२. शान्ति x ________

३. दु:खी x ________

४. मित्रता x ________

५. लाभ x ________

परियोजना कार्य

V. ''वन'' का चित्र उतारकर उसके बारे में पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

VI. व्यक्तित्व का विकास।

यदि आप अपने सामने कोई बुरा कार्य होता देखें तो क्या करेंगे ?

क - क्या आप अपने हाथ से उस बुरे कार्य को रोकने का प्रयास करेंगे ?

ख - क्या आप अपनी ज़बान से कुछ कहेंगे या केवल मन में उसे बुरा जानेंगे ?

ग - क्या आप भी उस कार्य में सम्मिलित हो जाएँगे ?